2 अक्टूबर 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

अपनी वासनाओं को, कषायों को मारना; विकारों को जीतना ही वास्तविक वीरता है।

ह्न धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ-183

वर्ष : 33, अंक : 13 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (प्रथम), 2010 सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व धूमधाम से मनाया गया

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 12 सितम्बर से 22 सितम्बर, 2010 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

बड़ौदा (गुज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर दिनाँक 12 से 22 सितम्बर 2010 तक मुमुक्षु मण्डल एवं दि. जैन समाज के आग्रह पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रतिदिन रात्रि में **धर्म के दशलक्षण** पर मार्मिक व्याख्यान हुये। इसके अतिरिक्त प्रथम दिन प्रात: **णमोकार महामंत्र** एवं पर्व के मध्य शनिवार-रविवार को **आत्मा की खोज** व **मैं स्वयं भगवान हूँ** पर विशेष प्रवचन भी हुये। एक दिन रात्रि में प्रवचन के पूर्व पश्चाताप खण्ड काव्य का वाचन किया गया।

इसी प्रसंग पर प्रात: पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर के समयसार के निर्जरा अधिकार एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल बाल कक्षा पण्डित सुदीपजी शास्त्री अमरमऊ ने ली।

इस अवसर पर श्री अजितभाई जैन परिवार द्वारा धर्म के दशलक्षण, अहिंसा, शाकाहार, मैं स्वयं भगवान हूँ इत्यादि 7 पुस्तकों के 1250 सेट बडौदा जैन समाज में वितरित किये गये।

सम्पूर्ण आयोजन में सैंकड़ों लोगों ने धर्मलाभ लिया तथा लगभग 13 हजार रुपये के सी.डी. एवं डी.वी.डी. कैसेट घर-घर पहुंचे।

दिनाँक 23 सितम्बर को बड़ौदा से लौटते समय **सूरत** जैन समाज के विशेष आग्रह पर सायंकाल डॉ. भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर विशेष प्रवचन हुआ। साथ ही पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर के प्रवचन का लाभ भी मिला।

जयपुर (बड़े दीवानजी का मंदिर) : यहाँ महापर्व के अवसर पर राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रतिदिन रात्रि में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक एवं सरल भाषा में प्रवचनों का लाभ मिला। प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्रों ने प्रश्नमंच कराया।

जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन) : यहाँ प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण महामंडल विधान का आयोजन महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में किया गया। इसके पश्चात् गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं पण्डित रमेशचंदजी लवाणवालों द्वारा प्रवचनरत्नाकर के आधार से प्रवचन हुए। दोपहर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के दशलक्षण धर्म पर सी.डी. प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल भक्ति व छात्र प्रवचन के पश्चात् मुख्य प्रवचन पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा दशलक्षण धर्म पर हुए। रात्रि में महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

ज्ञातव्य है कि यहाँ सुगंध दशमी के दिन युवा फैडरेशन महानगर जयपुर शाखा द्वारा सायंकाल षट्लेश्या पर आधारित एक झांकी का प्रदर्शन किया गया, जिसे देखकर जयपुर शहर के हजारों लोगों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

सिलवानी (म.प्र.) : यहाँ 6 से 24 सितम्बर तक ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा प्रात: गुणस्थान विवेचन पर प्रवचन एवं कक्षा, दोपहर में शंका-समाधान एवं रात्रि में ज्ञान समुच्चयसार के आधार से सात तत्त्वों पर प्रवचन हुये। 25 व 26 सितम्बर को बेगमगंज में भी आपके प्रवचनों का लाभ मिला।

जयपुर (आदर्शनगर) : यहाँ प्रतिदिन नित्यनियम पूजन के पश्चात् बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रतिदिन धर्म के दशलक्षण एवं रात्रि में अनेकांत-स्याद्वाद एवं निश्चय-व्यवहार आधारित व्याख्यानों का 500-600 साधर्मी भाई-बहनों ने लाभ लिया। ज्ञातव्य है कि यहाँ सुगंध दशमी के दिन गोम्मटेश्वर बाहुबलि की झांकी का प्रदर्शन भी किया गया।

मुम्बई-भूलेश्वर : यहाँ महापर्व के अवसर पर श्री 1008 चन्द्रप्रभ दि. जैन मंदिर में आचार्य विद्यासागरजी की शिष्या ब्र.सुशीलादीदी एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रतिदिन दोनों समय दो-दो प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: सामूहिक पूजन के उपरांत ब्र.दीदी द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा एवं पण्डितजी द्वारा समयसार की 17-18वीं गाथा पर प्रवचन तथा सायंकाल पण्डितजी के मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं तदुपरान्त ब्र.दीदी के दसलक्षण धर्मों पर मार्मिक एवं सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन सामूहिक पूजन-विधान पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा एवं पण्डित अभयजी खड़ैरी ने सम्पन्न कराई।

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ श्री शीतलनाथ दि. जैन बड़ा मंदिर किला अन्दर में श्री टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार की दूसरी गाथा एवं रात्रि में मोक्षमार्ग

(शेष पृष्ठ 3 पर...)

सम्पादकीय – 43

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ६७

विगत गाथा ६६ में कहा गया है कि जिसप्रकार पुद्गल द्रव्यों की अनेक प्रकार की स्कन्ध रचना पर से किए बिना होती दिखाई देती है, उसीप्रकार कर्मों की बहु प्रकारता भी पर से अकृत है।

प्रस्तुत ६७वीं गाथा में कहते हैं कि कर्मों की विचित्रता (बहु प्रकारता) अन्य द्रव्यों से नहीं की जाती।

मूल गाथा इसप्रकार है –

जीवा पोग्गलकाया अण्णण्णोगाढगहणपडिबद्धा।
काले विजुज्जमाणा सुहदुक्खं देंतिभुञ्जन्ति ।।६७।।

(हरिगीत)

पर, जीव अर पुद्गलकरम पय–नीरवत प्रतिबद्ध हैं।
करम फल देते उदय में जीव सुख–दुख भोगते।।६७।।

आचार्य श्रीकुन्दकुन्ददेव मूलगाथा में कहते हैं कि जीव और पुद्गलकाय परस्पर अवगाह्य से एक–दूसरे से बद्ध है, काल से पृथक् होने पर सुख–दुःख देते हैं।

आचार्यश्री अमृतचन्द्र समयव्याख्या टीका में कहते हैं कि निश्चय से जीव और कर्म को निज–निज रूप का ही कर्तृत्व है, तथापि व्यवहार से ऐसा कहा जाता है कि 'जीव को कर्मफल देते हैं और जीव कर्मफल को भोगता है, ऐसा अनुचित नहीं है, क्योंकि यह कथन परस्पर विरोधी नहीं है।'

जीव में मोह–राग–द्वेष की स्निग्धता (चिकनाई) के कारण तथा पुद्गल स्कन्ध स्वभाव से ही स्निग्ध होने के कारण परस्पर बद्धरूप से रहते हैं। जब वे परस्पर पृथक् होते हैं, तब उदय पाकर खिर जाने वाले पुद्गल कर्म सुख–दुःख रूप आत्मपरिणामों के निमित्त मात्र होने की अपेक्षा निश्चय से और इष्टानिष्ट विषयों के निमित्त मात्र होने की अपेक्षा व्यवहार से सुख–दुःखरूप फल देते हैं तथा जीव सुख–दुःख रूप आत्मपरिणामों के भोक्ता होने की अपेक्षा निश्चय से तथा इष्टानिष्ट विषयों के भोक्ता होने की अपेक्षा व्यवहार से सुख–दुःखरूप फल भोगते हैं।

इसी गाथा में कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में कहते हैं –

(दोहा)

जीव और पुद्गल दुहू, आपस मैं मिलि एक।
कालपाय बिछुरै दुहू, दाता भुगता टेक।।३१६।।

(सवैया इकतीसा)

मोह–राग–द्वेष तीनौं जीव चिकनाई ए है,
नेह रूक्ष चिकनाई अनु कै अनूप है।
बंध की अवस्था मैं दोनों मिलि एकमेक,
अवगाहकारी तातैं बंधै अंधकूप है।।
थिति पूरी होतनासै भासै सुख–दुःखरूप,
निश्चै–विवहार देसै अनु का स्वरूप है।
जीव निहचै सुभाव विवहारी विषैभाव,
दौनौं भाव भोगी लसै जानै सोई भूप है।।३१७।।

(दोहा)

निहचै करि जो देखिये, वस्तु सरब निज रूप।
पर स्वरूप धारक नहीं, पै विवहार अनूप।।३१८।।

कवि के कहने का अर्थ यह है कि जीव और पुद्गल दोनों परस्पर में मिलकर एक हो जाते हैं तथा समय पाकर बिछुड़ते हैं तथा सुख–दुःख भी देते हैं, भोगते हैं, अर्थात् पुद्गलकर्म दुःख देते हैं और जीव भोगते हैं।

मोह–राग–द्वेष जीव की चिकनाई है तथा – स्नेह–रूक्ष अणु की चिकनाई है, बंध की अवस्था में दोनों मिलकर एक हो जाते हैं, बन्ध को प्राप्त हो जाते हैं। जब ये स्थिति पाकर परस्पर पृथक् होते हैं तब पुद्गल स्कंध फल देते हैं और जीव भोगते हैं। जो दोनों के ज्ञाता रहते हैं वे ही ज्ञानी हैं, चैतन्यराज हैं।

इसी भाव को स्पष्ट करते हुए कानजीस्वामी कहते हैं कि जो जीव द्रव्य के और पुद्गलास्तिकाय के प्रदेश पुंज अनादिकाल से परस्पर अत्यन्त सघन मिलाप से बन्ध अवस्था को प्राप्त हैं, वे ही जीव एवं पुद्गल उदयकाल की अवस्था में अपना रस देकर खिरते हैं। तब कर्म साता असाता के रूप सुख–दुःख देते हैं और जीव भोगते हैं।

निश्चय से तो आत्मा ज्ञानानन्द स्वरूप है; परन्तु वह जब अपने स्वभाव से चूककर विकार भाव करता है, तब पुद्गल वर्गणायें अपने कारण कर्मरूप से परिणमित होती हैं तथा ये कर्म वर्गणायें जीव को अनादिकाल से घने रूप में बाँध रही हैं अर्थात् अनादिकाल से जीव और कर्म एक क्षेत्रावगाह रूप से रह रहे हैं।

आत्मा आत्मारूप से तथा जड़ जड़रूप से परस्पर कर्मरूप होते हैं। किसी एक कारण दूसरे का परिणमन नहीं है। जब पुद्गलकर्म अपना रस (अनुभाग) देकर खिर जाते हैं तब साता या असाता संयोग की प्राप्ति जीव को होती है। अज्ञानी जीव उनमें भले–बुरे की कल्पना करते हैं। इसकारण वे कर्मों के फल को भोगते हैं – ऐसा कहा जाता है।

किसी को पैसा मिले, किसी को रोग हो, किसी के पुत्र की मृत्यु हो, किसी को सर्प काटे – ये सब प्रसंग स्वयं के कारण होते हैं तथा पापकर्म का उदय उसमें निमित्त होता है तथा जो जीव अपने राग से हर्ष–शोक करता है, वह उसजनित दुःख को भोगते हैं – ऐसा कहा जाता है।

तात्पर्य यह है कि शुभ–अशुभ बाह्य पदार्थों में कर्म निमित्त कारण है। सबको कर्म के अनुसार संयोगों की प्राप्ति होती है; किन्तु अज्ञानी पर में सुख–दुःख की कल्पना करता है, जो यथार्थ नहीं है। ●

(पृष्ठ 1 का शेष...)

प्रकाशक एवं दशधर्म पर सरल भाषा में मार्मिक प्रवचन हुये। उनके साथ ही पधारी उनकी सुपुत्री कु. परिणति पाटील ने दोपहर में द्रव्यसंग्रह की कक्षा ली एवं रात्रि में रोचक व ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जो समाज द्वारा विशेषरूप से सराहे गये।

प्रात: नित्यनियम पूजन, दशलक्षण विधान तथा जिनेन्द्र भक्ति का विशेष आयोजन किया गया। श्री टोडरमल महाविद्यालय में तीन छात्रों के लिये अध्ययन हेतु सहयोग राशि समाज द्वारा प्राप्त हुई। **– मलूकचंद जैन**

मुम्बई (दादर) : यहाँ पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर द्वारा दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त ब्र.वासन्तीबेन आदि तीन ब्र.बहनों की कक्षाओं का भी लाभ मिला। रात्रि में पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा एवं पण्डित अभयजी शास्त्री खड़ैरी ने बालकक्षा का संचालन किया।

मुम्बई (मुमुक्षु मण्डल) : यहाँ जवेरी बाजार स्थित श्री सीमंधर जिनालय में दशलक्षण पर्व के अवसर पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रात: धर्म के दशलक्षण एवं ग्रंथाधिराज समयसार पर प्रवचन एवं रात्रि में ज्ञान एवं वैराग्यवर्धक लोकालोक के स्वरूप पर चर्चा की गई। अंतिम तीन दिनों में धार्मिक क्विज प्रतियोगिता का सुन्दर आयोजन किया गया।

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान एवं दोनों समय प्रवचनसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में उन्हीं की धर्मपत्नी विदुषी स्वर्णलताजी द्वारा कक्षा ली गई। रात्रि में स्थानीय लोगों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

आशियाना (लखनऊ) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा के प्रतिदिन प्रात: तत्त्वार्थसूत्र एवं समयसार पर तथा सायं धर्म के दशलक्षण एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। **– नरेशचंद जैन**

जावरा–रतलाम (म.प्र.) : यहाँ शास्त्री नगर स्थित श्री चन्द्रप्रभु दि. जैन मंदिर में ब्र.सुकुमालजी झांझरी द्वारा प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार एवं सायंकाल बालकक्षा के उपरांत रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दश धर्मों पर प्रवचन हुये। दोपहर में मोक्षशास्त्र पर कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन पदमा गंगवाल एवं रानी गोधा द्वारा किया गया।

इन्दौर (रामाशा मन्दिर) : यहाँ पण्डित शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। इनके साथ ही पधारे इनके सुपुत्र पण्डित सर्वज्ञजी शास्त्री द्वारा प्रात: मारवाड़ी मंदिर में तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई एवं सायंकाल रामाशा मंदिर में दश धर्मों पर प्रवचन हुये।

दिनाँक 19 सितम्बर को पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा मारवाड़ी मंदिर में इन भावों का फल क्या होगा ? विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ, जिसका युवावर्ग पर बहुत गहरा एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

मुम्बई (मलाड) : यहाँ पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण विधान एवं सायंकाल भक्ति पण्डित देवांगजी गाला मुम्बई एवं पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई ने संपन्न कराई। रात्रि में स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

बारां (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: पण्डित सुरेशजी जैन गुना द्वारा समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर प्रवचन हुये। दोपहर में विदुषी अनुभूति द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई। सायंकाल रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दस धर्मों का स्वरूप समझाया गया। रात्रि में प्रतिदिन प्रश्नमंच एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। **– ऋषभचंद जैन**

अर्नाकुलम (केरल) : यहाँ पर्व के अवसर पर महावीर दि. जैन मुमुक्षु चैत्यालय में जैन युवा फैडरेशन के राजस्थान प्रदेश प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर द्वारा प्रात: द्रव्यसंग्रह एवं सायंकाल धर्म के दशलक्षण पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में विदुषी सीमा जैन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र के पहले एवं दूसरे अध्याय पर कक्षायें ली गई, जिसमें महिलाओं एवं पुरुषों ने बढ–चढकर भाग लिया तथा कंठपाठ के रूप में सुनाया।

त्रिचूर में बी.एड. में अध्ययनरत छात्र पण्डित दीपकजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित श्रेणिकजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित मिथुनजी शास्त्री बेलगांव एवं पण्डित अजयजी गोरे शास्त्री द्वारा शनिवार एवं रविवार को भव्य सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ। श्री जिनेन्द्र शास्त्री ने वीतराग–विज्ञान पाठशाला का गठनकर श्री शैलेशजी दोशी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राजुल दोशी द्वारा प्रत्येक रविवार को तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा तीसरे अध्याय से अध्यापन कराने का दायित्व सौंपा। **– नरेश दोशी**

रामटेक–नागपुर (महा.) : यहाँ पण्डित विक्रान्तजी शास्त्री द्वारा तीनों समय क्रमश: दशधर्म, छहढाला एवं समयसार पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

शिकोहाबाद (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित मोहितजी शास्त्री द्वारा प्रात: पूजन विधान, दोपहर में क्रमबद्धपर्याय की कक्षा एवं सायंकाल बालकक्षा व भक्ति के पश्चात् दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

यहाँ प्रतिदिन बालकक्षा का शुभारंभ एवं युवा फैडरेशन का गठन किया गया। मुक्त विद्यापीठ में भी अनेक लोगों ने प्रवेश लिया।

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री शान्तिनाथ दि.जैन मंदिर हिरणमगरी सेक्टर–11 में पण्डित कांतिकुमारजी पाटनी इन्दौर द्वारा प्रात: पूजन के पश्चात् प्रवचनसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं सायंकाल नियमसार पर प्रवचन हुये। रात्रि में प्रवचन के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। क्षमावणी के अवसर पर जिनेन्द्र शोभायात्रा भी निकाली गई।

धामपुर–बिजनौर (उ.प्र.) : यहाँ श्री शांतिनाथ जिनालय में पण्डित आकाशजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् दशधर्म पर प्रवचन, सायंकाल बालकक्षा तथा रात्रि में समाधितंत्र, षट्लेश्या, अनेकान्त आदि विषयों पर चर्चा हुई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

लाम्बाखोह (राज.) : यहाँ पण्डित अर्पितकुमारजी शास्त्री द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। इस अवसर पर बीस तीर्थंकर विधान का आयोजन स्थानीय विद्वान पण्डित रमेशचंदजी जैन द्वारा संपन्न कराया गया। रात्रि में वीतराग–विज्ञान पाठशाला के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

मैनपुरी (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित विकासजी शास्त्री द्वारा प्रात: सामूहिक पूजन के उपरांत समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर प्रवचन हुये एवं दोपहर में छहढाला पर कक्षा ली गई। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् दशधर्म पर प्रवचन हुये एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

नोट : यदि आपने अपने यहाँ के समाचार अभी तक नहीं भेजे हैं तो शीघ्र भेजें, दशलक्षण पर्व के शेष समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

तिथि दर्प

ग – 2011

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

61 सोलहवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

इसप्रकार हम देखते हैं कि जब इसके रागादिभाव होने का विषाद नहीं है, उनके नाश का उपाय भी नहीं है, तो फिर इसके रागादि बुरे हैं – ऐसा श्रद्धान भी कैसे होगा ?

अपने बचाव में जब वह कहता है कि भरत चक्रवर्ती क्षायिक सम्यग्दृष्टि थे; फिर भी उनके रागादि भाव थे तो उसका उत्तर देते हुए पण्डितजी कहते हैं कि **ज्ञानी के भी मोह के उदय से रागादि होते हैं – यह सत्य है; परन्तु उनके बुद्धिपूर्वक रागादि नहीं होते। इसका विशेष वर्णन आगे करेंगे।...**

तथा भरतादिक सम्यग्दृष्टियों के विषय–कषायों की प्रवृत्ति जिस प्रकार होती है, वह भी विशेषरूप से आगे कहेंगे; पर अभी तू इतना समझ ले कि यदि तू उनके उदाहरण से स्वच्छन्द होगा तो तुझे तीव्र आस्रव–बंध होगा।[१]

पण्डित टोडरमलजी के उक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि उनके चित्त में सम्यग्दृष्टि के राग–वैराग्यमय जीवन पर विशेष प्रकाश डालने का विकल्प था, जो पूरा न हो सका। इसप्रकार के विकल्प मुझे भी आते रहे हैं, पर अभी तक तो कुछ हो नहीं पाया।

चक्रवर्ती भरत के जीवन पर मैंने छोटी-छोटी दो कहानियाँ अवश्य लिखी हैं; जिनमें उक्त कथन की कुछ-कुछ झलक देखी जा सकती है।[२]

'मैं कौन हूँ?' नामक कृति में समागत 'आत्मानुभवी पुरुष की अन्तर्बाह्यदशा' नामक निबंध में भी ज्ञानी की परिणति के बारे में बहुत कुछ स्पष्ट किया है।

अन्त में निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''इसलिए रागादिक को बुरे–अहितकारी जानकर उनके नाश के अर्थ उद्यम रखना।

वहाँ अनुक्रम से पहले तीव्र रागादि छोड़ने के अर्थ अशुभ कार्य छोड़कर शुभ में लगना, और पश्चात् मन्दरागादि भी छोड़ने के अर्थ शुभ को भी छोड़कर शुद्धोपयोगरूप में होना।[३]''

तात्पर्य यह है कि छोड़ना तो शुभ और अशुभ – दोनों भावों को ही है; किन्तु पहले अशुभ को छोड़कर शुभ में आना और फिर शुभ को भी छोड़कर शुद्ध में जाना – ऐसा क्रम है।

अभी तक तो उन लोगों की बात थी, जो शुभभावरूप धर्म कार्यों से विरक्त हैं; पर अशुभभावरूप व्यापारादि कार्यों में संलग्न हैं।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २०७
२. ये कहानियाँ लेखक की अन्य कृति 'आप कुछ भी कहो' में प्रकाशित हैं।
३. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २०८

अब उन लोगों की बात करते हैं; जिन्होंने व्यापारादि गृहकार्य भी छोड़ दिये हैं और शुभ से तो विरक्त हैं ही –

''तथा कितने ही जीव अशुभ में क्लेश मानकर व्यापारादि कार्य व स्त्री–सेवनादि कार्यों को भी घटाते हैं तथा शुभ को हेय जानकर शास्त्राभ्यासादि कार्यों में नहीं प्रवर्तते हैं, वीतरागभावरूप शुद्धोपयोग को प्राप्त हुए नहीं हैं; इसलिए वे जीव अर्थ, काम, धर्म, मोक्षरूप पुरुषार्थ से रहित होते हुए आलसी–निरूद्यमी होते हैं।

उनकी निन्दा पंचास्तिकाय[१] **की व्याख्या में की है। उनके लिए दृष्टान्त दिया है कि जैसे बहुत खीर–शक्कर खाकर पुरुष आलसी होता है व जैसे वृक्ष निरुद्यमी हैं; वैसे वे जीव आलसी–निरुद्यमी हुए हैं।''**

यद्यपि पण्डितजी के उक्त कथन में सबकुछ स्पष्ट ही है; इसमें कुछ विशेष कहने की आवश्यकता नहीं है; तथापि मैंने ऐसे लोगों को प्रत्यक्ष देखा है, जिन पर उक्त कथन हूबहू लागू होता है।

ऐसे लोगों में एकप्रकार के लोग तो वे होते हैं; जिनके पास बाप-दादों की अपार दौलत है और दूसरे प्रकार के वे लोग होते हैं, जो दूसरों पर अपना सम्पूर्ण भार डालकर निश्चिन्त रहते हैं।

दोनों ही प्रकार के लोग स्वच्छन्द, आलसी और निरुद्यमी होते हैं और ऐसी ही स्थिति को धर्मदशा मान लेते हैं।

खाओ, पिओ, मौज करो, घूमो–फिरो; कहीं कोई मर्यादा नहीं – इसप्रकार की प्रवृत्ति का नाम ही स्वच्छन्दता है। **प्रमाद में पड़े रहने का नाम आलसीपन है और कुछ करना ही नहीं – ऐसी दशा का नाम निरुद्यमीपना है।**

प्रश्न : आलसी और स्वच्छन्दी – ये दोनों दोष परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं। ऐसी स्थिति में ये दोनों दोष एक व्यक्ति में कैसे हो सकते हैं?

उत्तर : इनकी स्वच्छन्दता तो पंचेन्द्रिय विषयों (भोगों) के संदर्भ में देखी जाती है और प्रमाद अर्थात् आलस स्वाध्याय, तत्त्वचिन्तन, व्रतादि पालन में देखा जाता है। ये लोग भोगों में सक्रिय और आत्मानुभूति संबंधी पुरुषार्थ में आलसी होते हैं।

आत्मध्यान तो बहुत दूर, ये लोग स्वाध्यायादि प्रवृत्ति से भी विरक्त रहते हैं, प्रमाद सहित काल गंवाते हैं। आँखें बन्द कर बैठ जाते हैं। इसी को ध्यान (शुद्धोपयोग) समझते हैं और थकान के अभाव में जो आराम महसूस होता है, उसे अतीन्द्रिय आनन्द मानकर संतुष्ट हो जाते हैं।

जब ये लोग कुछ करते ही नहीं हैं, करना भी नहीं चाहते तो फिर थकान क्यों होगी ? जो चाहें, जब चाहें, जैसा चाहें; भक्ष्य–अभक्ष्य सभी कुछ खायें–पियें और निश्चिन्त होकर मस्त पड़े रहें तो फिर थकान होगी कैसे ? आराम तो महसूस होगा ही। ये लोग उसी आराम को अतीन्द्रिय

१. गाथा १७२ की टीका में

आनन्द मान लेते हैं।

ऐसे अनर्गल आचरण को धर्म माने तो फिर कुगति ही होगी।

इन आलसी लोगों की चित्तवृत्ति कुछ इसप्रकार की होती है -

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गये, सबके दाता राम।।

ऐसे लोगों के लिए कविवर पण्डित बनारसीदासजी ने लिखा है -

आलस निरुद्दिम की भूमिका मिथ्यात्व मांहि,
जहां न संभारै जीव मोह नींद सैन में।।[१]

जहाँ अज्ञानी जीव मोहनींद में ही सोते रहते हैं और स्वयं को संभालते नहीं हैं, आत्मा को जानने का प्रयास भी नहीं करते, ऐसी स्वाध्याय आदि प्रवृत्ति में उत्साह के अभावरूप आलस और उद्यम के अभावरूप दशा निश्चयाभासरूप अगृहीत मिथ्यात्व की भूमिका में ही होती है।

मुझे वैराग्य हो गया है, मैंने महीनों से घरवालों से, बच्चों से बात तक नहीं की। वे आते हैं तो उनसे बात भी नहीं करता हूँ, आँखें बंद कर बैठ जाता हूँ। ऐसी प्रवृत्ति करके ये लोग स्वयं को वैरागी मान लेते हैं।

ऐसे लोगों को धंधे-पानी पर जाने की आकुलता नहीं है; कभी पपड़ी, कभी सुकड़ी, कभी गाँठिया बदल-बदल कर खाते रहते हैं और स्वयं को अनाकुल मानकर मन ही मन खुश होते रहते हैं।

ऐसे लोगों की स्थिति और प्रवृत्ति का चित्रण करते हुए पण्डितजी लिखते हैं -

''जैसे कोई स्वप्न में अपने को राजा मानकर सुखी हो; उसीप्रकार अपने को भ्रम से सिद्ध समान शुद्ध मानकर स्वयं ही आनंदित होता है, अथवा जैसे कहीं रति मानकर सुखी होता है; उसीप्रकार कुछ विचार करने में रति मानकर सुखी होता है, उसे अनुभवजनित आनन्द कहता है तथा जैसे कहीं अरति मानकर उदास होता है; उसीप्रकार व्यापारादिक, पुत्रादिक को खेद का कारण जानकर उनसे उदास रहता है और उसे वैराग्य मानता है - सो ऐसा ज्ञान-वैराग्य तो कषायगर्भित है।

वीतरागरूप उदासीन दशा में जो निराकुलता होती है, वह सच्चा आनन्द, ज्ञान, वैराग्य ज्ञानी जीवों के चारित्रमोह की हीनता होने पर प्रगट होता है।

तथा वह व्यापारादिक क्लेश छोड़कर यथेष्ट भोजनादि द्वारा सुखी हुआ प्रवर्तता है और वहाँ अपने को कषायरहित मानता है; परन्तु इसप्रकार आनन्दरूप होने से तो रौद्रध्यान होता है।

जहाँ सुख सामग्री को छोड़कर दु:खसामग्री का संयोग होने पर संक्लेश न हो, राग-द्वेष उत्पन्न न हो; तब नि:कषायभाव होता है।

ऐसी भ्रमरूप उनकी प्रवृत्ति पायी जाती है।[२]''

१. नाटक समयसार, बंधद्वार, छंद ६

२. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २०८-२०९

इसप्रकार हम देखते हैं कि इन लोगों को न तो अतीन्द्रिय आनन्द की खबर है, न इनकी उदासीनता ही सच्ची है और न इन्हें ज्ञान-वैराग्य है, है तो भी कषायगर्भित है।

इनका यह विषयानन्द रौद्रध्यानरूप है; क्योंकि वास्तविक ज्ञान-वैराग्य तो आत्मा के आश्रय से होते हैं, सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और आंशिक वीतरागता होने पर, प्रगट होने पर ही प्रगट होते हैं।

ऐसे लोगों के समक्ष प्रश्न उपस्थित करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं -

''अब उनसे पूछते हैं कि तुमने बाह्य तो शुभ-अशुभ कार्यों को घटाया, परन्तु उपयोग तो बिना आलम्बन के रहता नहीं है; तो तुम्हारा उपयोग कहाँ रहता है ? सो कहो।

यदि वह कहे कि आत्मा का चिंतवन करता है, तो शास्त्रादि द्वारा अनेकप्रकार से आत्मा के विचार को तुमने विकल्प ठहराया और आत्मा का कोई विशेषण जानने में बहुत काल लगता नहीं है, बारम्बार एकरूप चिंतवन में छद्मस्थ का उपयोग लगता नहीं है, गणधरादिक का भी उपयोग इसप्रकार नहीं रह सकता, इसलिए वे भी शास्त्रादि कार्यों में प्रवर्तते हैं, तेरा उपयोग गणधरादिक से भी कैसे शुद्ध हुआ मानें ? इसलिए तेरा कहना प्रमाण नहीं है।[१]''

देखो ! जब एक आत्मा में गणधरादि का उपयोग भी अधिक काल नहीं रहता; तब इसका उपयोग निरंतर एक आत्मा में ही कैसे रह सकता है?

यदि उपयोग लगातार एक अंतर्मुहूर्त तक आत्मा में ही ठहर जावे तो केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है; पर यह कहता है कि मैं तो निरंतर एक आत्मा का ध्यान ही करता रहता हूँ। यदि ऐसी स्थिति है तो फिर उसे केवलज्ञान तो बहुत दूर, आत्मज्ञान भी क्यों नहीं हुआ ?

इसप्रकार उसके कथन को अप्रमाणिक सिद्ध करते हुए पण्डित टोडरमलजी उनकी वास्तविक स्थिति का चित्रण इसप्रकार करते हैं -

''जैसे कोई व्यापारादि में निरुद्यमी होकर निठल्ला जैसे-तैसे काल गंवाता है; उसीप्रकार तू धर्म में निरुद्यमी होकर प्रमाद सहित यों ही काल गंवाता है। कभी कुछ चिंतवनसा करता है, कभी बातें बनाता है, कभी भोजनादि करता है; परन्तु अपना उपयोग निर्मल करने के लिए शास्त्राभ्यास, तपश्चरण, भक्ति आदि कर्मों में नहीं प्रवर्तता। सूना-सा होकर प्रमादी होने का नाम शुद्धोपयोग ठहराता है।

वहाँ क्लेश थोड़ा होने से जैसे कोई आलसी बनकर पड़े रहने में सुख माने वैसे आनन्द मानता है।[२]''

पण्डितजी के उक्त कथन से निश्चयाभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि की स्थिति पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है। **(क्रमश:)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २०८ २. वही, पृष्ठ २०९

2 अक्टूबर 2010, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जीवदया हेतु एक सहयोग आपका भी

मुम्बई स्थित देवनार कत्लखाने के विस्तार की योजना बनाने जा रही है। फलस्वरूप वहाँ प्रतिदिन 15 हजार पशु काटने की क्षमता और बढ जाएगी। इसे रोकने हेतु अहिंसा प्रेमी समाज से निवेदन है कि www.jivdaya.net की साईट में साइन पिटिशन (sign petition) पर क्लिक करके इस योजना के प्रति अपना विरोध प्रकट करें व करवायें, ताकि लाखों पशुओं को जीवनदान प्राप्त हो सके।

इस संदर्भ में पहले भी प्रयास किए गए थे; परन्तु अहिंसा प्रेमी समाज के सक्रिय विरोध के कारण विस्तार की योजना को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया था। अब पुन: यह बात उठाई जा रही है।

शोक समाचार

१. बड़ौदा (गुज.) निवासी श्रीमती गजीबेन डाह्यालाल शाह (पाटना कुवा वाला) का दिनाँक 22 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक अहमदाबाद में देहावसान हुआ। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 251/- प्राप्त हुये।

२. टीकमगढ (म.प्र.) निवासी श्रीमती प्रभादेवी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री बालचंदजी जैन का दिनाँक 18 सितम्बर को 81 वर्ष की आयु में समताभावपूर्वक जयपुर में देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्रीमती शैल बंसल जयपुर (सह सम्पादक - समन्वय वाणी) की माताजी थी।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

हार्दिक आमंत्रण !

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट जयपुर द्वारा **13 वाँ बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर दिनांक 10 से 19 अक्टूबर, 2010** तक आयोजित हो रहा है। आप सभी को भावभीना आमंत्रण है। कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें ताकि आवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

बुकिंग हेतु शीघ्रता करें

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन द्वारा 25 दिसम्बर से 1 जनवरी 2011 तक आयोजित होने जा रही मालवा/निवाड क्षेत्र के तीर्थों की यात्रा हेतु यदि आपने अभी तक अपनी सीट रिजर्व नहीं कराई हो तो कृपया शीघ्रता करें। बुकिंग पहले आओ पहले पाओ के आधार पर होगी।

संपर्क - अ.भा. जैन युवा फैडरेशन, ए-4, बापूनगर, जयपुर

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

आप यहाँ आकर
दस दिनों के लिए दाखिल हो जाइये
आपकी हर बीमारी ठीक हो जाएगी
आपको भेदविज्ञान की कला सिखाई जाएगी,
आपके मिथ्यात्व का फोड़ा फोड़ दिया जाएगा
उसमें से एकांत, विपरीत, विनय, संशय और अज्ञान का मवाद निकाल दिया जाएगा
आपकी हर बीमारी का इलाज यहाँ हो जाएगा।
यहाँ तरह तरह के स्पेशलिस्ट आएंगे
चारों अनुयोगों के वे ज्ञाता होंगे
जिस अनुयोग के आप अभ्यासी हैं
उसी में आपको वे बोध देंगे
आपकी बीमारी की बारीकी से वे जाँच करेंगे,
आपको नियमित स्वाध्याय का अभ्यास कराएंगे,
आपके उपयोग को अशुभ व शुभ से हटाकर शुद्ध पर पहुंचा देंगे
आपके कर्तृत्व के बोझ को निश्चित ही घटा देंगे
आपको चिदानंद चिन्मात्र जता देंगे
आप अपने आप ठीक हो जाएंगे।
स्याद्वादमय जिनवाणी अमृत है
सुबह शाम इसका हर दिन पान कीजिए,
ओवरडोज नहीं होगा, जब चाहें इसे पी लीजिए
आपकी बीमारी असाध्य नहीं है यकीन कीजिए
हमारे आध्यात्मिक शिक्षण शिविर को एक बार आजमाइये।

- बाहुबलि भोसगे

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

10 से 19 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
21 अक्टूबर	मेरठ	प्रवचन
22 से 24 अक्टूबर	खतौली	सेमिनार व प्रवचन
2 नवम्बर	मंगलायतन-विश्वविद्या.	दीक्षान्त समारोह
4 से 7 नवम्बर	देवलाली	दीपावली
14 व 15 नवम्बर	हेरले (महा.)	जिनमंदिर शिलान्यास
18 से 21 नवम्बर	दिल्ली	अष्टाह्निका महापर्व
17 से 23 दिसम्बर	मंगलायतन	पंचकल्याणक
25 से 31 दिसम्बर	इन्दौर(मालवा)	फैडरेशन यात्रा
2 से 4 जनवरी	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा
15 से 20 जनवरी	उदयपुर	पंचकल्याणक

प्रकाशन तिथि : 28 सितम्बर 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127